15. दादी जी के महावाक्य

ज्ञान सुनाना तो सहज है, परन्तु ज्ञान के साथ–साथ जो निरन्तर योग की स्थिति चाहिए वह हमारे नयनों में कहाँ तक रहती, जो हमारी दृष्टि से दूसरे निहाल हो सकें। मेरे पुरुषार्थ का यही संकल्प है।

अमृतवेले आँख खुलती, रात को सोते, यह सवाल हमारी दिनचर्या में अनेक बार आता हमें अपनी नज़रों से सर्व आत्माओं को प्यारे बाबा की याद की छाप ऐसी देनी है जो वह निहाल हो जायें।

बाबा कहते, तुम्हें नज़र से निहाल करना है। निहाल करने वाला तो बाबा है, हम तो निमित्त हैं परन्तु बाबा हमारी स्थिति महान्, रूहानी, अशरीरी बनाने के लिए कहते, जिससे जो आत्मायें आयें वह निहाल हो जायें। निहाल कहो, संतुष्ट कहो या कहो अपनी झोली वरदानों से भरकर जायें।

वरदाता बाप ने हमें वरदानी बनाया है। यह संगमयुग वरदानों से झोली भरने का है। अमृतवेला वरदान प्राप्त करने का समय है। ब्राह्मण बच्चों को ही डायरेक्ट वरदान लेने का सौभाग्य है। एक तरफ वरदान लेने का सौभाग्य है दूसरे तरफ देने का हमारा कर्त्तव्य है। मैं वरदानी हूँ या मुझे वरदान प्राप्त हैंहमेरा इसी पर मनन होता है। फिर रेसपांड आता कि सर्व वरदान मैंने कहाँ तक प्राप्त किये हैं जो सर्व वरदान दूसरों को भी प्राप्त करा सकें। अगर यही समय मेरे वरदान लेने की लॉटरी का है तो मैं पूरे वरदान लेती जा रही हूँ? मेरा कम्पलीट कनेक्शन बाबा के साथ जुटा है या नीचे आ जाती?

अपनी चैकिंग करने से इतनी मीठी मस्ती रहती, चाहे जो भी कार्य हो रहा हो परन्तु अनेक कार्य व्यवहार से बुद्धि परे हो जाती। हरेक अपने से पूछे, मैं कोई वरदान में मिस तो नहीं हूँ? मैं अपना पूरा–पूरा अधिकार ले रही हूँ/ले रहा हूँ?

बाबा कहते, तुम्हें मेरे से सारी शक्तियों का वरदान लेना है। मैं अगर किसी शक्ति में कमज़ोर हूँ तो मैं पूछूँहमेरे में यह शक्ति कम क्यों? मैं अपनी शक्ति कम क्यों रखूँ!

ओम् शांति।